❀ भगवान् श्रीबौधायनाचार्याय नमः ❀

श्रीसीता सप्तकम्

जगतः कारिका याऽस्ति जगतोधारिका च या । जगतो लयकर्त्री या सा मे सीता प्रसीदतु ॥
सर्वेभ्यो याऽभयं दत्ते सकृत स्यस्याः प्रपत्तितः । सर्वेश्वरी च शक्त्यब्धि सा मे सीता प्रसीदतु ॥
सर्वफल प्रदात्री या सर्वाराध्या च सर्वथा । सर्वभूत शरण्या या सा मे सीता प्रसीदतु ॥
परात्परा वदान्या या भजनीया परात्परा । परात्परा च वन्द्या या सा मे सीता प्रसीदतु ॥
सर्वावतारमूला या सर्वस्था सर्वरक्षिका । सर्वात्मा सर्वदेहा या सा मे सीता प्रसीदतु ॥
ज्ञानभक्ति प्रदाया च भुक्ति मुक्ति प्रदा च या । सर्वैश्वर्य प्रदा या च सा मे सीता प्रसीदतु ॥
अमोघाद् दर्शनाद् यस्या वन्दनादर्चनात् तथा । मुमुक्षुर्मोक्षमाप्नोति सा मे सीता प्रसीदतु ॥

—❀—

जो जगत की कर्त्री-धारिणी-तथा संहारिका है वह श्रीसीता मुझपर प्रसन्न हों ॥ १ ॥ एकबार शरणागति लेने मात्र से ही जो सबको अभय प्रदान करतीं हैं वह सर्वेश्वरी तथा सर्व शक्तियों की समुद्र श्रीसीता मुझ पर प्रसन्न हों ॥ २ ॥ जो सर्वाराध्या-सर्वफल प्रदात्री तथा सर्व प्राणीमात्र को शरण देने वाली हैं वह श्रीसीता मुझपर प्रसन्न हों ॥ ३ ॥ जो परात्परा भजनीया है, जो वदान्यों में परात्परा हैं तथा वन्दनीयों में भी परात्परा है वह श्रीसीताजी मुझपर प्रसन्न हों ॥ ४ ॥ जो सभी भगवान के अवतारों की मूल कारण हैं, सर्वान्तर्यामी हैं, सबकी संरक्षिका हैं, सबकी प्राणात्मा है, तथा सबका शरीर है वह श्रीसीताजी मुझपर प्रसन्न हों ॥ ५ ॥ जो ज्ञान भक्ति-मुक्ति सुख भोग तथा सर्वैश्वर्य प्रदान करने वाली हैं वह श्रीसीताजी मुझपर प्रसन्न हों ॥६॥ जिनके अमोघ दर्शन से, वन्दन से तथा अर्चन से मुमुक्षु मोक्ष प्राप्त करता है वह श्रीसीताजी मुझ पर प्रसन्न हों ॥ ७ ॥ श्रीबौधायन महर्षि प्रणीत यह श्रीसीता सप्तक सर्व प्रकार के श्रेय को प्रदान करने वाला हो ॥ ८ ॥

महर्षि भगवान् श्रीबौधायन (श्रीपुरुषोत्तमाचार्य) प्रणीत यह "श्रीसीता-सप्तक" सम्पूर्ण हुआ ॥"